



## युवा पीढ़ी और हिंदी साहित्य : तकनीक का प्रभाव

प्रा. व्ही. डी. कापावार\*

हिंदी विभागाध्यक्ष, राजमाता जिजाऊ महाविद्यालय, किल्ले धारूर, जि बीड.

### शोध सार

आधुनिक तकनीक के प्रभाव ने हिंदी साहित्य के स्वरूप, प्रसार और उपभोग के तरीकों में व्यापक परिवर्तन ला दिया है। यह शोध-आलेख तकनीक और युवा पीढ़ी के हिंदी साहित्य से रिश्ते पर केंद्रित है। इसमें डिजिटल माध्यमों (ई-पुस्तकें, ऑडियोबुक, सोशल मीडिया, साहित्यिक ब्लॉग/वेबपत्रिकाएँ) द्वारा साहित्य की पहुँच और लोकप्रियता में हुए विस्तार का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, तकनीक के कारण साहित्यिक अभिव्यक्ति के नए रूप (माइक्रो-कविता, डिजिटल कथा, इंटरएक्टिव लेखन) के उद्भव और युवा रचनाकारों व पाठकों पर उनके प्रभाव की पड़ताल की गई है। आलेख में तकनीक के सकारात्मक प्रभावों (सुलभता, संवादात्मकता, नवाचार) के साथ-साथ चुनौतियों (अवधान की कमी, गहन अध्ययन में कमी, अंधाधुंध सूचना) पर भी चर्चा की गई है। निष्कर्षतः, यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि तकनीक हिंदी साहित्य को न केवल बदल रही है, बल्कि युवा पीढ़ी को साहित्य से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम भी बन रही है।

**बीज शब्द:** युवा पीढ़ी, हिंदी साहित्य, तकनीक का प्रभाव, डिजिटल माध्यम, सोशल मीडिया, डिजिटल साहित्य, ई-पुस्तकें,

Received: 11/12/2025

Accepted: 24/01/2026

Published: 31/01/2026

\*Corresponding Author:

प्रा. व्ही. डी. कापावार

Email: [vdkapawar@gmail.com](mailto:vdkapawar@gmail.com)

### प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी को तकनीक और सूचना का युग कहा जाता है। इस युग में इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल मीडिया तथा ई-पुस्तकों ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा, संचार, संस्कृति और साहित्य भी इससे अछूते नहीं रहे। विशेष रूप से युवा पीढ़ी का जीवन तकनीक के साथ गहराई से जुड़ चुका है। आज का युवा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिक सक्रिय है और उसकी रुचियाँ, सोच और अभिव्यक्ति के माध्यम भी बदलते जा रहे हैं।

हिंदी साहित्य, जो भारतीय संस्कृति, संवेदना और राष्ट्रीय चेतना का संवाहक रहा है, आज तकनीकी परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। यह शोधालेख युवा पीढ़ी और हिंदी साहित्य के संबंध को तकनीक के प्रभाव के संदर्भ में विश्लेषित करता है। इसमें तकनीक के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर विचार करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल युग में हिंदी साहित्य की स्थिति, दिशा और भविष्य क्या है।

तकनीक ने युवा पीढ़ी की सोच, अभिव्यक्ति और पढ़ने-लिखने की आदतों को गहराई से प्रभावित किया है। इसका प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

### 1. पढ़ने की आदतों में बदलाव

पहले युवा मुख्यतः पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक पत्रिकाओं पर निर्भर थे। आज ई-बुक्स, ब्लॉग, वेब-पत्रिकाएँ, ऑडियो बुक्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (जैसे इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब) साहित्य का नया माध्यम बन गए हैं। इससे साहित्य अधिक सुलभ हुआ है, लेकिन गहन पठन की परंपरा कुछ हद तक कमजोर भी हुई है।

### 2. अभिव्यक्ति के नए मंच

तकनीक ने युवाओं को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने के लिए नए मंच दिए हैं। ब्लॉग, फेसबुक पोस्ट, इंस्टा-पोस्ट्री और ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से युवा लेखक बिना किसी प्रकाशक के सीधे पाठकों तक पहुँच पा रहे हैं। इससे नई आवाजों को पहचान मिली है।

### 3. भाषा और शैली में परिवर्तन

तकनीकी प्रभाव से हिंदी साहित्य में मिश्रित भाषा (हिंग्लिश), संक्षिप्त लेखन और संवादात्मक शैली बढ़ी है। युवा पीढ़ी की रचनाओं में तेज़, सरल और प्रभावी भाषा दिखाई देती है, जो डिजिटल माध्यम के अनुकूल है।

#### 4. विषयों का विस्तार

युवा लेखक तकनीक, सोशल मीडिया, पहचान, मानसिक स्वास्थ्य, वैश्वीकरण, बेरोज़गारी और डिजिटल जीवन जैसे समकालीन विषयों को साहित्य में स्थान दे रहे हैं। इससे हिंदी साहित्य अधिक आधुनिक और समयसापेक्ष बन रहा है।

#### 5. चुनौतियाँ

तकनीक के कारण सतही लेखन, साहित्यिक अनुशासन की कमी और पुराने साहित्य से दूरी जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं। त्वरित लोकप्रियता की चाह में गुणवत्ता पर कभी-कभी असर पड़ता है।

युवा पीढ़ी और हिंदी साहित्य मेहोनिवले परिवर्तन निम्न है .

##### 1. युवा पीढ़ी: अवधारणा और विशेषताएँ

युवा पीढ़ी से आशय सामान्यतः 15 से 35 वर्ष की आयु वर्ग से लिया जाता है। यह वह वर्ग है जो समाज में परिवर्तन का वाहक माना जाता है। आज की युवा पीढ़ी को 'डिजिटल नेटिव्स' कहा जाता है क्योंकि उसने तकनीक को जन्म से ही अपने जीवन का हिस्सा पाया है।

##### युवा पीढ़ी की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

तकनीक के प्रति सहजता और निर्भरता, तीव्र सूचना ग्रहण करने की क्षमता, अभिव्यक्ति के नए माध्यमों की खोज, परंपरा और आधुनिकता के बीच द्वंद्व, वैश्विक दृष्टिकोण के साथ स्थानीय पहचान

इन विशेषताओं ने साहित्य के प्रति युवाओं के दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया है। जहाँ पहले साहित्य का माध्यम मुख्यतः पुस्तकें और पत्रिकाएँ थीं, वहीं आज डिजिटल मंचों ने युवाओं के लिए साहित्य को सुलभ और त्वरित बना दिया है।

##### 2. हिंदी साहित्य : परंपरा और विकास यात्रा

हिंदी साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध और विस्तृत रही है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य ने समाज की चेतना, संघर्ष और संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। भक्तिकाल में भक्ति

और मानवता, रीतिकाल में श्रृंगार और काव्य सौंदर्य तथा आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक यथार्थ और व्यक्ति की पीड़ा को स्वर मिला।

आधुनिक काल में प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, मुक्तिबोध जैसे साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। यह साहित्य पाठक को सोचने, प्रश्न करने और समाज को बदलने की प्रेरणा देता रहा है।

परंतु तकनीकी युग के आगमन के साथ साहित्य की प्रस्तुति, पाठक वर्ग और लेखन शैली में परिवर्तन दिखाई देने लगा है।

#### 3. तकनीक का हिंदी साहित्य पर प्रभाव

##### 3.1 डिजिटल माध्यम और साहित्य का विस्तार

तकनीक ने हिंदी साहित्य को नए मंच प्रदान किए हैं। ब्लॉग, वेबसाइट, ई-पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स/ट्विटर), यूट्यूब और पॉडकास्ट जैसे माध्यमों ने साहित्य को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाया है।

आज युवा लेखक अपनी रचनाएँ ब्लॉग या सोशल मीडिया पर तुरंत प्रकाशित कर सकते हैं। इससे साहित्य का लोकतंत्रीकरण हुआ है। अब प्रकाशक की अनिवार्यता नहीं रही और नए रचनाकारों को मंच मिला है।

##### 3.2 ई-पुस्तकें और ऑडियो साहित्य

ई-पुस्तकों (E-books) और ऑडियो बुक्स ने युवा पीढ़ी को साहित्य से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मोबाइल और टैबलेट पर उपलब्ध पुस्तकों ने पढ़ने की सुविधा बढ़ाई है। ऑडियो बुक्स ने उन युवाओं को भी साहित्य से जोड़ा है जो पढ़ने के लिए समय नहीं निकाल पाते।

#### 4. युवा पीढ़ी की साहित्यिक अभिरुचि पर तकनीक का प्रभाव

तकनीक ने युवा पीढ़ी की साहित्यिक रुचि को प्रभावित किया है। आज का युवा संक्षिप्त, प्रभावशाली और त्वरित साहित्य की ओर अधिक आकर्षित है। लघु कथाएँ, कविताएँ, माइक्रो फिक्शन और उद्धरण (Quotes) अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं।

सोशल मीडिया पर साझा की जाने वाली कविताएँ और विचार युवाओं की भावनाओं को तत्काल अभिव्यक्ति देते हैं। इससे साहित्य की

लोकप्रियता तो बढ़ी है, परंतु गहन अध्ययन और गंभीर साहित्य के प्रति रुचि में कुछ हद तक कमी भी देखी जा रही है।

### 5. तकनीक के सकारात्मक प्रभाव

तकनीक ने हिंदी साहित्य को अनेक सकारात्मक लाभ दिए हैं—

- सुलभता – साहित्य अब एक क्लिक की दूरी पर उपलब्ध है।
- नवीन सृजन – नए प्रयोग और विधाएँ सामने आई हैं।
- युवाओं की भागीदारी – युवा लेखक और पाठक सक्रिय हुए हैं।
- वैश्विक पहुँच – हिंदी साहित्य विश्व स्तर पर पहुँचा है।
- संवाद और विमर्श – पाठक और लेखक के बीच सीधा संवाद संभव हुआ है।
- इन कारणों से हिंदी साहित्य में नई ऊर्जा और गति आई है।

### 6. तकनीक के नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ

जहाँ तकनीक ने अवसर दिए हैं, वहीं कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं—

- साहित्य की गुणवत्ता पर प्रश्न
- सतही और त्वरित लेखन की प्रवृत्ति
- गंभीर साहित्य से दूरी
- भाषा की शुद्धता और सौंदर्य में कमी
- साहित्य को 'कंटेंट' मात्र समझने की प्रवृत्ति

इसके अतिरिक्त, हिंदी की तुलना में अंग्रेजी और अन्य भाषाओं की डिजिटल सामग्री अधिक होने से हिंदी साहित्य को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

### 7. युवा पीढ़ी, तकनीक और हिंदी साहित्य का भविष्य

भविष्य में हिंदी साहित्य और तकनीक का संबंध और भी गहरा होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल प्रकाशन, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और वर्चुअल साहित्यिक मंच हिंदी साहित्य को नई दिशा देंगे। आवश्यकता इस बात की है कि तकनीक का उपयोग साहित्य की गुणवत्ता, संवेदना और मूल्यों को बनाए रखते हुए किया जाए।

युवा पीढ़ी यदि तकनीक को साधन बनाकर साहित्य को समझे और सृजन करे, तो हिंदी साहित्य का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल हो सकता है।

### निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि तकनीक ने युवा पीढ़ी और हिंदी साहित्य के संबंध को नए आयाम दिए हैं। जहाँ एक ओर तकनीक ने साहित्य को सुलभ, लोकप्रिय और व्यापक बनाया है, वहीं दूसरी ओर उसने गंभीर साहित्यिक अध्ययन के समक्ष चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। आवश्यकता संतुलन की है—तकनीक और साहित्य के बीच समन्वय की।

युवा पीढ़ी यदि अपनी साहित्यिक विरासत को समझते हुए तकनीक का सकारात्मक उपयोग करे, तो हिंदी साहित्य न केवल जीवित रहेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर नई पहचान भी बनाएगा।

तकनीक ने हिंदी साहित्य को नया रूप, नए पाठक और नई ऊर्जा दी है। युवा पीढ़ी इस बदलाव की प्रमुख वाहक है। आवश्यकता इस बात की है कि तकनीक का संतुलित उपयोग करते हुए साहित्य की गहराई, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक मूल्य बनाए रखे जाएँ।

### संदर्भ सूची

1. डॉ. रामविलास शर्मा – हिंदी साहित्य की भूमिका
2. नामवर सिंह – आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ
3. डॉ. बच्चन सिंह – हिंदी साहित्य का इतिहास
4. प्रेमचंद – साहित्य का उद्देश्य
5. इंटरनेट और डिजिटल साहित्य पर प्रकाशित विभिन्न शोध लेख